छठा अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में नाटक साहित्य सबसे अधिक विकसित साहित्यिक विधा हैं। मानव जीवन का प्रतिबिंब नाटक में हैं। हिन्दी नाटक का प्रारंभ भारतेन्दु युग से हुआ हैं। किन्तु भारतेन्दु के पिता बाबू गिरिधरदास कृत 'नहुष' नाटक को भारतेन्दु ने प्रथम हिन्दी नाटक स्वीकार किया हैं। हिन्दी नाटक के विकास में इतिहास की प्रेरणा महत्त्वपूर्ण हैं। इतिहास की पृष्ठभूमिपर लिखे ऐतिहासिक नाटक समाज को प्रेरणादायी ठहरे हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक नाटक इतिहास की साहित्यिक प्रतिकृति हैं। भारतेन्दु का 'नीलदेवी' हिन्दी का पहला ऐतिहासिक नाटक हैं।

ऐतिहासिक नाटक नाट्य साहित्य की वस्तुनिष्ठ तथ्यों की रसात्मक उदात्तीकृत भावाभिव्यक्ति हैं। ऐतिहासिक नाटककार अपने नाटक में राष्ट्रीय एकता और राजनीति का उद्देश्य को अवश्यक मानता हैं। ऐतिहासिक नाटक में दो प्रकार की विशेषाताएँ दिखाई देती हैं - १) इतिहास के माध्यम से विस्मृत जीवन और जगत् का प्रत्यक्षीकरण होता हैं। २) कला के माध्यम से मानवीय प्रवृत्तियों विशेषा क्षणों में किए गए आचरणों का अनुभव होता हैं।

भारतेन्दु काल के सभी नाटकों का मूलस्त्रोत बंगाली नाटक साहित्य था। बंगाली नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय के नाटकों का हिन्दी में केवल अनुवाद हो रहा था। ये नाटक समाज को उचित दिशा निर्देश करने में सफल हैं। अतः यह स्पष्ट होता हैं कि भारतेन्दु युगीन ऐतिहासिक नाटक मौलिक न होकर अनूदित हैं। फिर भी विषायवस्तु की दृष्टि से यह नाटक प्रेरणादायक सिद्ध हुआ हैं।

ऐतिहासिक नाटकों का — रूप जयशंकर प्रसाद के काल में विकसित हुआ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

इस काल में प्राचीन भारतीय गौरव और सभ्यता का चित्र उपस्थित करनेवाले नाटक लिखे । इस काल के नाटकों का मूल स्वर हिन्दु-सभ्यता और संस्कृति का चित्रण करना था । इस प्रकार प्रसाद युगीन नाटक एक ओर समाज के समाने इतिहास प्रामाणिक रुप में रखते हैं, तो दूसरी ओर समाज को सही दिशा में ले जाते हैं । समसामायिक समस्यापर विचार इन नाटकों में हुआ हैं ।

प्रसादोत्तर कालीन नाटकों की मूल प्रेरणा राष्ट्रीयता थी । प्रसादोत्तर युगीन सभी ऐतिहासिक नाटक भारतीय समाज को प्राचीन इतिहास की याद दिलाकर आदर्श की ओर ले जानेवाले हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर ऐतिहासिक नाटक रंगमंच की दृष्टि से लिखे हैं और नाटक में अभिनव प्रयोगों का आरंभ हुआ । इस काल के नाटकों का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण हैं, जो समाज तथा देश की नैतिकता बढानेवाला हैं । स्वराष्ट्र रक्षा की भावना जनता में प्रस्थापित करना हैं ।

पं.लक्ष्मीनारायण मिश्र - नाट्य साहित्य --

हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक साहित्य में पं.लक्ष्मीनारायण मिश्र का स्थान महत्त्वपूर्ण हैं । देश की संस्कृतिनिष्ठा और राष्ट्रीय भावना को जगाने का प्रयास मिश्र ने अपने साहित्य द्वारा किया हैं । नाटक के क्षेत्र में समस्या प्रधान नाटकों के प्रथम प्रणेता मिश्र जी हैं । इनके सभी नाटकों में भारतीय नीति, धर्म, सदाचार, शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता तथा अध्यात्म का विश्लेषण किया गया हैं ।

' वितस्ता की लहरें ' नाटक --

पं.लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत ' वितस्ता की लहरें ' नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा नाटक हैं । इस नाटक में राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने का संदेश दिया गया हैं । इस रचना का उद्देश्य भारत की प्राचीन सांस्कृतिक महानता का वर्णन करके उसके प्रति हमें अनुरक्त करना हैं । यह रचना युग की वीरता तथा

राष्ट्र की रक्षा के लिए सर्वस्व बलिदान करने की भावना प्रतिपादित करती हैं ।

नाट्य शिल्प की दृष्टि से वितस्ता की लहरें नाटक सफल नाट्य कृति हैं । मिश्र जी के नाटकों पर इब्सन और शॉ का प्रभाव पड़ा हैं इसलिए इस नाटक में भी भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य तत्वों का संमिश्र रूप दिखाई देता हैं । जो उद्देश्य नाटककारने व्यक्त किया है, वही इस नाटक की सार्थकता सिध्द करता हैं ।

पात्रों के चरित्र-चित्रण द्वारा नाटककार ने आज के मानव को आदर्श का रास्ता दिखाया हैं । भारतीय राष्ट्र-प्रेम की भावना और भारतीय आदर्श संस्कृति पर लेखक ने प्रकाश डाला हैं । बौध्दिकता के स्थानपर संवेदनशील भावना को अधिक महत्त्व प्रदान किया हैं । सभी चरित्र आदर्श हैं, इनमें अधिकांश चरित्र भारतीय संस्कृति के उदात गुणों से परिपूर्ण हैं ।

संवादों की रचना पात्रानुकूल हैं । इसमें अधिकांश संवाद सरल, स्वाभाविक, प्रभावोत्पादक एवं कलासम्पन्न हैं । इसमें वीर रस प्रधान होते हुए भी शृंगार रस का परिपाक अपेक्षाकृत पूर्ण हैं । वितस्ता के तट पर भारत ने अपनी स्वातंत्रता की रक्षा कर बर्बर यवनों को अपनी उदात्त संस्कृति के सम्मुख नतमस्तक कर दिया हैं । इसप्रकार उद्देश्य की दृष्टि से यह नाटक सफल हैं । अभिनेयता की दृष्टि से यह रचना अनुपयुक्त हैं ।

पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र के वितस्ता की लहरें नाटक का समग्र अध्ययन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि यवन और भारत दोनों ही देशों के संघर्ष में भारत विजयी होता हैं । भारतीय संस्कृति तथा उसकी चिरविश्रुत आदर्श युध्दनीति एवं सामाजिक नियमों की श्रेष्ठता पर प्रकाश डाला हैं । इस रचना में देशभक्ति और राष्ट्र के लिए उत्सर्ग की भावना का प्रतिपादन हुआ हैं ।